Dr. Vandana Suman
Professor
Dept - of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
UG - Sem - (IV) - MJC - 07
Basic Concepts of Philosophy

"Aatman : Sankhya Darshan" 1

(सांख्य दर्शन में आत्म विचार)

सांख्य दर्शन में 'आत्मा' को पुरुष कहते हैं। सांख्य दर्शन में पुरुष सम्प्रत्यय महत्त्वपूर्ण तत्व है। पुरुष सजीव होता है प्राणवान होता है और संवेदनशील होता है। सांख्य में यदि पुरुष की योजना न की गयी होती तो प्रकृति और महदादि पदार्थों की कोई उपयोगिता एवं आवश्यकता न रह जाती। सचेतन और संवेदनशील होने के कारण पुरुष ही अन्य अचेतन पदार्थों का उपभोक्ता होता है। लोक-व्यवहार में हम कहते हैं कि 'यह मेरा पुत्र है', 'यह मैं हूँ'। दर्शन की दृष्टि से समस्त सांसारिक जीव, चाहे वे कृमि-कीट हों चाहे मनुष्य हों, किसी का कोई अस्तित्व नहीं है, किन्तु उनके भीतर जो सर्वव्यापी चेतन है, जिसको हम अन्तरात्मा, या अन्तश्चेतना कहते हैं, वस्तुतः वही सब कुछ है। यह देह निर्जीव है। इसके भीतर जब तक आत्मा (पुरुष) का आवास है तभी तक हम अपने-पराये का अनुभव करते हैं। इसके निकल जाने से यह शरीर मिट्टी-पाषाण से बढ़कर कुछ नहीं है।

यह तो हुआ पुरुष के अस्तित्व का लौकिक दृष्टिकोण। सांख्य की दृष्टि से आत्मा ज्ञान का

Everyone thinks of changing the world, but no one thinks of changing himself.

ग्राहिता और शुद्ध चैतन्यस्वरूप है,
किन्तु वह स्वयं न तो ज्ञान है और
न केवल चेतन ही। ज्ञान इसका विषय
और चेतन इसका गुण है।
"मैं हूँ" अथवा यह मेरा है, ऐसा अनुभव प्रत्येक व्यक्ति करता है
पुरुष या आत्मा का अस्तित्व
निर्विवाद है। भारतीय दर्शन के विभिन्न
संप्रदायों में आत्मा के स्वरूप में
विभिन्न मत मतान्तर है। कुछ लोग
आत्मा को स्थूल शरीर ही मानते हैं
चार्वाक, बौद्ध मतावलम्बी आदि आत्मा
को विज्ञान का प्रवाह मात्र मानते हैं।
न्याय वैशेषिक और प्रभाकर मीमांसा
के अनुसार आत्मा एक अचेतन
द्रव्य है जो विशेष अवस्थाओं में
चैतन्य का आधार हो जाता है।
जबकि अद्वैत वेदान्त का मत है
कि आत्मा नित्य, शुद्ध, बुद्ध, मुक्त,
चैतन्य और आनन्द स्वरूप हैं।
सांख्य मतानुसार
पुरुष (आत्मा) शरीर, इन्द्रिये, मन,
बुद्धि, आदि से भिन्न है। यह सांसारिक
विषय नहीं है। आत्मा वह चैतन्य
स्वरूप शुद्ध तत्व है जो सर्वदा ज्ञाता
के रूप में रहता है कभी ज्ञान का
विषय नहीं बन सकता। वह चैतन्य
का आधारभूत द्रव्य नहीं स्वतः

चैतन्य स्वरूप है। चैतन्य इसका गुण नहीं स्वभाव है। वेदान्त की भाँति सांख्य दर्शन में आत्मा (पुरुष) को आनन्द स्वरूप नहीं माना गया है। आनन्द और चैतन्य दो भिन्न वस्तुएँ हैं। अतएव इन्हें एक ही पदार्थ को तत्व मानना उचित नहीं है। पुरुष या आत्मा केवल शुद्ध ज्ञान है जो प्रकृति की परिधि से परे और शुद्ध चैतन्य स्वरूप है। इसका ज्ञान प्रकाश सर्वदा बना रहता है। केवल ज्ञान के विषय बदलते रहते हैं। आत्मा (पुरुष) में कोई क्रिया नहीं होती। वह निष्क्रिय और अविकारी होता है। सांख्य-दर्शन का पुरुषतत्व स्वयं में नित्य और सर्वव्यापी सत्ता है। जो सभी विषयों से असंपृक्त और राग-द्वेष रहित है। जितने भी कर्म या परिणाम हैं, सुख या दुख हैं वे सभी प्रकृति और इसके विकारों के धर्म हैं पुरुष के नहीं।

भाट्ट मीमांसकों और शांकर वेदान्तियों की आत्मा-सम्बन्धी व्याख्या से सांख्य का दृष्टिकोण आंशिक रूप से मेल खाता है किन्तु वस्तुतः इनमें मौलिक भिन्नता है।

आत्मा ज्ञाता है। वह न तो

शरीर है, न इन्द्रियाँ, न मस्तिष्क और न बुद्धि है। वह चैतन्यस्वरूप है। मीमांसा का भी यही मत है।

इस अवस्था को सामने रखकर सांख्य में अनेक पुरुषों की सत्ता स्वीकार की गयी। देखा यह जाता है कि संसार में कुछ मनुष्यों की धर्म में प्रवृत्ति होती है, कुछ की अधर्म में, कुछ अज्ञानी होते हैं, कुछ ज्ञानी होते हैं। इसी प्रकार सत्व, रज और तम इन तीनों गुणों के परिणाम (विपर्यय) भेद से भी आत्मा की अनेकता सिद्ध होती है, जैसे — देवात्माओं में सुख, मनुष्यात्माओं में दुःख और नारकीयात्माओं में मोह पाया जाता है। संसार के ये अनेकानुभव यह बताते हैं कि विभिन्न शरीरों में विभिन्न आत्माये हैं। इसलिए सांख्य अनेकात्मवादी दर्शन है।

चेतन (आत्मा) देखने वाला होता है। वही साक्षी होता है। जिस प्रकार लोक व्यवहार में वादी और प्रतिवादी, दोनों अपने-अपने विवाद को साक्षी के सामने रखते हैं इसी प्रकार प्रकृति अपने चरित्र (विषय) को पुरुष के सामने प्रस्तुत करती है। इसलिए

पुरुष साक्षी है तथा है। वह द्रष्टा है, उदासीन है और सुख : दुःख त्रयाभाव रूप कैवल्य का अधिकारी है।

पुरुष (जीवात्मा, परमात्मा) और प्रकृति का प्रत्यक्ष से नहीं अनुमान से ज्ञान होता है। जो प्रत्यक्ष है वह प्रकृति का परिणाम है। इसे ही विकृति कहा गया है। शरीर में रहने से पुरुष को जीवात्मा और संसार में व्याप्त होने से परमात्मा कहा गया है। न्याय में जो स्थान आत्मा को प्राप्त है सांख्य में वही स्थान पुरुष का है।

SUNDAY 02